

कैसे करें फलों व सब्जियों में फल मक्खी का समुचित प्रबंधन?

अंजना ठाकुर और मधु पटियाल*

*विषयवाद विशेषज्ञ (कीट विज्ञान)

चै.स.कृ. हिमाचल प्रदेश कृषि विश्वविद्यालय, पालमपुर, 176062

*वरिष्ठ वैज्ञानिक, भा.कृ.अनु.परि. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, शिमला

फल मक्खी भारत का प्रमुख कीट है जिसके कारण हर साल लगभग 5000 करोड़ रुपये का आर्थिक नुकसान होता है। यह देश के अधिकांश क्षेत्रों में पाई जाती है एवं इसके प्रकोप के कारण आम, अमरूद, आड़ू, नाशपति, खुमानी, लीची, निम्बू कुल के फल, टमाटर, कद्दू-वर्गीय सब्जियों को 10 से 80 प्रतिशत तक हानि पहुँचाती है। कई क्षेत्रों में फल मक्खी के कारण कद्दू-वर्गीय सब्जियों में 30-100 प्रतिशत और आम में 40-75 प्रतिशत तक हानि पाई गई है।

यह कीट नए क्षेत्रों में स्थापित होने के बाद तेजी से फैलता है। इसका जीवन काल छोटा व अधिक अण्डे देने एवं विकट मौसम में जीवित रहने की क्षमता होती है। फल मक्खी का प्रबंधन भी कठिन है क्योंकि यह फलों के अंदर होता है व आंतरिक रूप से खाता है और बहुभक्षी (कई प्रकार के पौधों

पर निर्वाह करना) स्वभाव का होता है। फलों के भीतर मौजूद होने के कारण इस कीट के प्रबंधन के लिए छिड़के गए कीटनाशकों का इसकी सुण्डियों (मैगट) पर ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ता है। अत्याधिक कीटनाशकों के छिड़काव से न केवल वातावरण प्रदूषित होता है अपितु फलों व सब्जियों में कीटनाशकों के विषैले अंश भी रह जाते हैं।

हानि के लक्षण

फल मक्खी द्वारा हानि सुण्डियों से होती है जो फलों के गुदे को खा कर अंदर ही अंदर पनपती है। प्रभावित फल टेढ़े-मेढ़े हो जाते हैं और सड़ने लगते हैं। ग्रसित फलों पर किटाणुओं का आक्रमण भी हो जाता है ऐसे फल सड़-गल जाते हैं और उनसे बदबू आने लगती है। इस प्रकार उत्पादन में भारी कमी आती है।

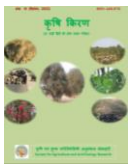


पहचान व जीवन चक्र

फल मक्खी लाल-भूरे रंग की व 4 से 6 मिलीमीटर तक लम्बी होती है। इसके पंख चमकदार व पारदर्शी होते हैं जिन पर पीले-भूरे रंग की धारियां होती हैं। मादा मक्खी अपने शरीर का पिछला नुकीला भाग फल के अंदर प्रवेश कराकर अण्डे देती है। अण्डे अकेले या 4 से 12 तक के झुंडों में दिए जाते हैं। लगभग 1-3 दिन बाद अण्डे से

सुण्डी निकलती है। सुण्डी अवस्था 10-12 दिनों की होती है। पूर्ण विकसित सुण्डियां प्रभावित फल में छेद करके बाहर निकल जाती है और मिट्टी में गिर जाती हैं व प्यूपा अवस्था में प्रवेश करती है। प्यूपा अवस्था 10-12 दिन की होती है। बरसात के दिनों में इनका जीवन चक्र दो सप्ताह में पूरा हो जाता है जबकि सर्द ऋतु में यह 2-3 महीने में पूरा होता है।





प्रबन्धन

फल मक्खी ग्रसित फलों को खेतों में ही अकसर फेंक दिया जाता है। इन सड़े गले फलों में मक्खी के अण्डे या सुण्डियां होती हैं जो इनमें पनपती रहती हैं। प्यूपा अवस्था आने पर वहीं पर मिट्टी में प्रवेश कर जाती हैं और जब इन्हें अनुकूल वातावरण मिलता है, यह मक्खी रूप में विकसित होकर फलों में अण्डे देती है। इस प्रकार खेतों में फल मक्खी की संख्या हर साल बढ़ती रहती है। इसलिए इसका नियन्त्रण एक गंभीर समस्या बन गया है। अतः यह आवश्यक है कि किसान उचित फल मक्खी प्रबंधन विधियों को सामूहिक तौर पर अपनाएं तभी इनका प्रबंधन संभव है।

- कीट ग्रस्त फलों को इकट्ठा करें व इन्हें मिट्टी के अन्दर गहरा गड्ढा खोदकर दबा दें।

- खरपतवारों को नष्ट करें क्योंकि यह पौधे वयस्क मक्खियों का आश्रय स्थल होते हैं।
- ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करें।
- फलों की बैगिंग करके सुरक्षित रख सकते हैं।
- फल मक्खी के नियन्त्रण के लिए 50 ग्रा. गुड़ व 10 मि.ली. मैलाथियान 50 ई सी को 5 लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।
- कीटो की प्रभावी निगरानी व नियन्त्रण में फिरोमोन ट्रैप का प्रयोग करना बहुत लाभकारी रहता है। फल मक्खी ट्रैप या फिरोमोन ट्रैप @ 25 ट्रैप प्रति हैक्टेयर या 1 ट्रैप प्रति कनाल की दर से खेतों में लगाएं। ल्यूर (सैप्टा) को 45 दिनों के बाद अवश्य बदल दे, गार्मियों में 20-25 दिनों को बाद बदलने की आवश्यकता होती है।